टिप्पणी

10

बाल्यकाल

हम सभी के लिए बाल्यकाल, जीवन की एक सुन्दर अवस्था है। यह अवस्था खेल, परिकल्पना और भोलेपन की होती है। यह जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है और इसमें अभिवृद्धि एवं विकास के महत्वपूर्ण पहलू संलग्न होते हैं, जो संपूर्ण जीवन काल में निर्णायक होते हैं।

बाल्यकाल को पुनः चार उप–अवस्थाओं में विभाजित किया जा सकता है।

- शैशव (जन्म से 2 वर्ष)
- प्रारम्भिक बाल्यकाल (2 से 6 वर्ष)
- मध्य बाल्यकाल (6 से 11 वर्ष) और
- किशोरावस्था (12 से 19 वर्ष)।

शैशव, विकास के सभी क्षेत्रों की नींव है। यह काल, तेजी से शारीरिक अभिवृद्धि एवं विकास, संवेदी गतिक कौशलों का चरम सीमा पर विकास चिन्हित होता है। शैशव, संज्ञान, भाषा और सामाजिक–भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण है। यह अवस्था पहले ही अवगत कराई जा चुकी है। किशोरावस्था हम अगले पाठ में पढ़ेंगे।

इस पाठ में, हम विकास के विभिन्न पहलुओं जैसे शारीरिक, गतिक, संज्ञानात्मक सामाजिक और बाल्यकाल में व्यक्तित्व के विकास, को समझने का प्रयास करेंगे। हम बाल्यकाल के समय, संस्कृतिक प्रसंग में समाजीकरण की प्रक्रिया का भी अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आपः

- बाल्यकाल में शारीरिक एवं गतिक विकास का वर्णन कर सकेंगे;
- बाल्यकाल में संज्ञान विकास को समझ पायेंगे;

- बाल्यकाल में सामाजिक–सांवेगिक एवं व्यक्तित्व विकास को स्पष्ट कर सकेंगे, और
- सांस्कृतिक संदर्भ में समाजीकरण की प्रक्रिया को समझ पायेंगे।

10.1 बाल्यकाल में शारीरिक एवं गतिक विकास

शैशव काल में शारीरिक विकास अत्यधिक तीव्रता से होता है, तुलनात्मक दृष्टि से बाल्यकाल में यह धीमी गति से होता है। जैसे बालक के शरीर का आकार, ऊँचाई और भार बढ़ता है, मांसपेशियों और कंकाल की रचना में भी परिवर्तन आता है। जिससे कि बाल्यकाल में कई गतिक कौशलों का विकास होता है। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि शारीरिक एवं गतिक विकास में कुछ सामान्य प्रवृत्तियाँ होती हैं।

विभिन्न संस्कृतियों में, शारीरिक और गतिक विकास का क्रम समान होता है। यद्यपि इसमें बड़ी वैयक्तिक भिन्नताएं होती हैं। एक बच्चा 10 महीने में चल सकता है, वहीं दूसरा 24 महीनों में चल सकता है। शैशव और बाल्यकाल में शारीरिक और गतिक विकास के मुख्य पड़ाव सारणी 10.1 में दिये गये हैं।

सारणी 10.1 : शारीरिक और गतिक विकास के मील के पत्थर

– पेट के बल लेटे हुए ठोढ़ी ऊपर उठाना	1 महीना
– सिर और सीना उठाना	2 महीना
– लुढ़कना (पलटना)	4 महीना
– हथेली से वस्तुओं को बिना बैठे सहारे से उठाना	5 महीना
– उंगलियों और अंगूठे का अच्छा प्रयोग	7 महीना
– अकेले बैठना (बिना सहारे के)	8 महीना
– सहारे से खड़े होना (मेज–कुर्सी पकड़कर)	8–9 महीना
– सरकना	9 महीना
– स्वतंत्र खड़े होना	9–10 महीना
– कुछ कदम बिना सहारे के और पकड़ कर चलना	12–13 महीना
– वस्तुओं को अंगूठे और उंगलियों के छोरों से पकड़ना	13–14 महीना
– अकेले चलना	15 महीना

– भागना और सीढ़ियाँ चढ़ना	2 वर्ष
– पैर के अंगूठे के बल चलना	1–2/2 वर्ष
– तीन पहिए वाली साइकिल चलाना	3 वर्ष
– गेंद को सिर के ऊपर से फेंकना सीढ़ियों से एक–एक पैर रखकर नीचे उतरना	4 वर्ष
– जटिल आकृतियों की नकल करना	6 वर्ष

शारीरिक और गतिक विकास को समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि ये बच्चे के व्यक्तित्व, सामाजिक और भावनात्मक विकास का आधार बनाता है। ये बच्चे और माता के मध्य भावनात्मक बन्धन को बनाने में सहायक होता है। यह बच्चे की उसके अपने शरीर और गतिविधियों में दक्षता में सहायता भी करता है।

10.2 साधारण और निपुण गतिक विकास

गतिक विकास को सामान्यतः ''साधारण गतिक'' और ''निपुण गतिक'' दो श्रेणियों में बांटा जाता है। साधारण गतिक विकास, बड़ी मांसपेशियों के समूह पर नियंत्रण करता है जो बच्चे को इधर–उधर घुमाता है जैसे, सरकना, खड़े होना और चलना। अधिकतर इसमें पैर और पूर्ण शरीर संलग्न होता है, निपुणः गतिक विकास का अर्थ है छोटी मांसपेशियों की गतिविधियाँ जैसे पकड़ना, चुटकी काटना इत्यादि। निपुण गतिक विकास छोटे कार्यों में, निश्चित कार्यों में साधारणतया हाथों और उंगलियों का प्रयोग कर आवश्यक कार्यों में होता है। निपुण गतिक विकास, साधारण गतिक विकास से भिन्न है, जिसमें दैनिक कार्य करने के लिए कम निश्चितता की आवश्यकता होती है।

सारणी 10.2: साधारण एवं निपुण गतिक विकास के पड़ाव

बच्चे की आयु	**निपुण गतिक विकास में संलग्न क्रियाएं।**
0 और 3 महीने	वस्तु पकड़ना।
3 और 6 महीने	वस्तुओं को पकड़ने का प्रयास, वस्तुओं को मुख में डालना।
6 महीने और 1 वर्ष	खाना पकड़ने का प्रयास, हाथों और उंगलियों की सहायता से खेल खेलना।

1 वर्ष और 1–1/2 वर्ष	कागज पर लापरवाही से लिखना, गेंद को फेंककर पकड़कर खेलने का प्रयास करना।
1–1/2 वर्ष और 2 वर्ष	पेंसिल से लकीरें खींचना, चम्मच से थोड़ी सी सहायता से खाना खाने का प्रयास करना।
2 और 3 वर्ष	सहायता से दांत साफ करना और कपड़ों में बटन बंद करना सीखना।
3 और 5 वर्ष	बनाने वाले टुकड़ों को जोड़ना, चित्र बनाने में पेंसिल का प्रयोग करना, किताब के पन्ने पलटना।
5 से 7 वर्ष	आसानी से विभिन्न आकृतियाँ बनाना, बिना सहायता के ब्रश करना, कंघी करना, सफाई से आकृतियाँ काटना

10.1.3 प्रारम्भिक बाल्यकाल में शारीरिक एवं गतिक विकास (2–6 वर्ष)

प्रारम्भिक बाल्यकाल की अवधि 2–6 वर्ष तक होती है। इसे पूर्व विद्यालय अवस्था भी कहते हैं। बालक, जो गतिमान हो गया है, अब अपने निकटतम परिवार के अलावा कार्यक्षेत्र बढ़ाने के लिए सक्षम है। बाह्य समाज और परिवेश से अंतःक्रिया से बच्चे का मानसिक विकास होता है और वह सही सामाजिक व्यवहार के नियम भी सीखता है, जो उसे औपचारिक शिक्षा और विद्यालय जाने के लिए तैयार करते हैं। बहुत से शिशु अपनी शारीरिक एवं गतिक क्रियाओं में बिल्कुल बेढंगे प्रतीत होते हैं। किन्तु धीरे–धीरे उनकी गतिशीलता का कौशल शुद्ध और सुन्दर होता जाता है। चलते और भागते समय शरीर के सन्तुलन में ध्यान देने योग्य सुधार हो जाता है। एक 3 वर्ष का बालक सीधी रेखा में भाग सकता है और बिना गिरे अच्छे से कूद सकता है। एक 4 वर्ष का बालक रस्सी कूद सकता है, एक पांव पर कूद सकता है और एक दूरी से फेंकी गई बड़ी गेंद को पकड़ सकता है।

बाल्यकाल में निपुण गतिक कौशलों का विकास

- 2–3 वर्ष : स्वयं ही वस्त्र उतारना और वस्त्र पहनने में सहायता करना। एक वृत्त की और एक क्रास की नकल करता है, धागे में मोती डाल लेता है, एक पन्ने को पलट लेता है, कैंची से रेखा में पट्टियाँ काट लेता है, बड़े बटन लगा कर खोल सकता है।
- 3–5 वर्ष : एक वर्गाकार की नकल कर लेता है, अपना नाम लिख लेता है, पेंसिल पकड़ लेता है, जूते के लेस बाँध लेता है, रेखा को लगातार काट लेता है, कुछ बड़े अक्षर लिख लेता है।
- 5–7 वर्ष : त्रिकोण की नकल कर लेता है, साधारण आकृतियां काट लेता है, प्रथम नाम की नकल कर लेता है, 1 से 5 तक गिनती लिख लेता है, रेखाओं के भीतर रंग भर सकता है, ठीक से चिपका और गोंद लगा सकता है।

2 और 3 वर्ष के मध्य, बड़े बच्चे लड़खड़ाना बन्द कर देते हैं और एक अच्छी चाल का विकास होता है। वे भागने, कूदने और एक पैर से कूदने की योग्यता भी विकसित कर लेते हैं। ये थोड़ी बड़ी गेंद से फेंकने और पकड़ने के खले में भी भाग ले सकते हैं।

3 से 4 वर्ष के बच्चे सीढ़ी पर दोनों पैर एक साथ रखकर चल सकते हैं, वे दूसरी सीढ़ी का पायदान चढ़ने के पहले अपने दोनों पैरों को हर पायदान पर एक साथ लाते हैं। हालाँकि, उन्हें गिरने से बचने के लिए अभी भी कुछ सहायता की आवश्यकता होती है, क्योंकि अभी भी वह इस नई कला में निपुण नहीं हैं। इस आयु के बच्चे अधिक ऊँचा कूद और एक एक पांव से कूद सकते हैं, क्योंकि उनके पांव की मांसपेशियाँ और शक्तिशाली हो गई हैं।

इस अवधि में बच्चे गेंद को फेंकने और पकड़ने में पहले से अच्छे हो जाते हैं। एक रखी हुई गेंद को बल्ले से मार सकते हैं, तीन पहियों वाली साइकिल चला सकते हैं, अपने शरीर के सामने रखी हुई गेंद को पैर से मार सकते हैं वे अपने हाथों से वस्तुएँ बना सकते हैं जैसे टुकड़ों से मीनार बनाना, मिट्टी को मोड़कर, खुरदरे आकार बनाना और रंगों से आड़ी–तिरछी रेखा खींचना। इस आयु के बच्चे, एक हाथ के अतिरिक्त दूसरे हाथ का प्रयोग करने को प्राथमिकता देते हैं, यहीं सीधे हाथ वाला या उल्टे हाथ वाला बनने का आरम्भ होता है।

3 और 4 वर्ष के मध्य, बच्चे, अपनेआप खाना खाने में सुधार लाते हैं और बर्तन भी प्रयोग कर सकते हैं जैसे चम्मच, काँटे इत्यादि। वे रंगों या पेंसिल को मुट्ठी से पकड़ने के बजाए, लिखने वाले हाथ से पकड़ सकते हैं। वे अपने हाथों को घुमावदार गति में भी घुमा सकते हैं, जो कि किवाड़ की सांकल खोलने और डिब्बों का ढक्कन, खोलने में उपयोग में आते हैं। अधिक्तर बच्चे 4 वर्ष की आयु में शौचालय का उपयोग करना सीख जाते हैं।

जब बच्चे विद्यालयी आयु पर पहुँचते हैं तो शारीरिक विकास की दर युवावस्था की प्रारम्भिक अवस्था से कुछ धीमी हो जाती है, जहाँ विकास अत्यन्त तीव्रता से होता है। 6 वर्ष की आयु में बच्चा शारीरिक रूप से शरीर के नियंत्रण में संलग्न क्रियाओं को करने में सक्षम हो जाता है। छोटी माँसपेशियों के समन्वय की आवश्यकता तेज हाथ की क्रियाओं के लिए पड़ती है, जैसे कमीज के बटन लगाना या लघु आकृति की नकल करना, इसमें प्रारम्भिक बाल्यकाल से बड़ी ही नाटकीयता से सुधार होता है। बच्चे अपनी स्वयं की देखभाल के कार्यों, वस्त्र पहनने और उतारने के अतिरिक्त भी कार्य पूर्ण कर सकते हैं जैसे दाँत साफ करना, और अपने बालों में कंघी करना। इस आयु के बच्चे स्वतंत्र रूप से बिना बड़ों की देखभाल या सहायता के स्वयं खाना खा सकते हैं।

5 से 6 वर्ष में युवा बच्चे लगातार अपने पुराने कौशलों को शुद्ध करते रहते हैं। वे अधिक तेजी से दौड़ सकते हैं और दो पहियों वाली साइकिल जिसमें अभ्यास के लिए पहिए लगे होते हैं, (साइकिल को अधिक स्थिरता प्रदान करने के लिए) चला सकते हैं। इस उम्र के बच्चे नए प्रकार के शारीरिक खेल खेलने में निपुण हो जाते हैं जैसे जंगल जिम (जंगल की कसरत), और सी–सॉ और फिसलने वाले झूले पर झूलना प्रारम्भ करना और अपने आप झूला झूलना।

मध्य काल्यकाल में विकास (6–11 वर्ष)

इस अवस्था में शारीरिक विकास अधिक धीरे–धीरे होता है, और स्पष्ट परिवर्तन यौवनारंभ तक लगभग 11–13 वर्ष तक धीमे हो जाते हैं, जहाँ पुनः विकास दर बढ़ जाती है। लंबाई में, भार में और माँसपेशियों की शक्ति व तीव्रता में परिवर्तन होता है। इस अवधि में लैंगिक अन्तर बढ़ जाते हैं। 6 से 8 वर्ष की आयु में लड़कियाँ, लड़कों से थोड़ी छोटी होती हैं किन्तु बाद में इसकी प्रवृत्ति विपरीत हो जाती है। लड़कियों के भार में वृद्धि प्रारम्भ हो जाती है। एक 10 वर्ष की लड़की, उसी उम्र के लड़के से अधिक लम्बी और भारी दिख सकती है। विकास की तीव्रता लड़कों में लड़कियों के बाद में आती है। इस काल में बच्चे बड़े और छोटे माँसपेशियों के समूह पर अधिक नियंत्रण प्राप्त करते हैं। वे अधिक बलशाली, तेज और अच्छा गतिक समन्वय बनाते हैं। विद्यालय जाने वाले बच्चे ऊर्जावान होते हैं और सभी प्रकार के बाह्य खेलों का आनन्द ले सकते हैं। संज्ञानता की क्षमता में हुई बढ़ोत्तरी उन्हें नए खेल के नियम सीखने में सहायता करती हैं।

6–7 वर्ष की आयु का बालक जटिल आकृतियों, जैसे हीरा, रंगों के नमूने और आकृतियाँ, की नकल कर सकता है और उपकरणों एवं खिलानों को एकत्र कर सकता है। वे नेत्रों और हाथों के बीच कुशल समन्वय रखने वाले खेलों, जैसे फेंकने, पकड़ने और ढकेलने में, करने में अधिक कुशल हो जाते हैं। वे गतिक कौशलों को उत्तम बनाने और पूर्व कुशलता को और शुद्ध रखना जारी रखते हैं।

पाठगत प्रश्न 10.1

नीचे दिए गए प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए :

1. बाल्यकाल में विकसित 3 साधारण गतिक कौशलों के नाम दीजिए।

2. बाल्यकाल में विकसित 3 निपुण गतिक कौशलों के नाम बताइए।

10.3 संज्ञानात्मक विकास

संज्ञानात्मक विकास का तात्पर्य बच्चों के सीखने और सूचनायें एकत्रित करने के तरीके से है। इसमें अवधान में वृद्धि प्रत्यक्षीकरण, भाषा, चिन्तन, स्मरण शक्ति और तर्क शामिल हैं।

पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार हमारे विचार और तर्क अनुकूलन के भाग हैं। संज्ञानात्मक विकास एक निश्चित अवस्थाओं के क्रम में होता है। पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाओं का वर्णन किया है :

- संवेदी–गतिक अवस्था (जन्म से 2 वर्ष)
- पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था (2 से 7 वर्ष)
- प्रत्यक्ष संक्रियात्मक अवस्था (7 से 11 वर्ष)
- औपचारिक–संक्रियात्मक अवस्था 11 + वर्ष)

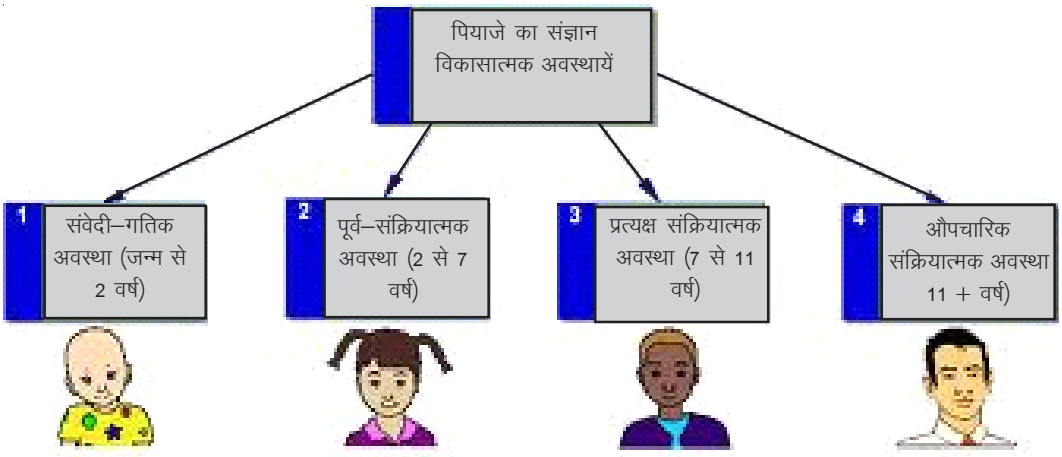

चित्र 10.1: पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त

निम्नांकित खण्ड में पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार बाल्यकाल में संज्ञानात्मक विकास पर दृष्टि डाली गई है।

प्रारंभिक बाल्यकाल में संज्ञानात्मक विकास (2 से 6 वर्ष)

इस काल में बच्चे, शब्द जैसे प्रतीकों, विभिन्न वस्तुओं, परिस्थितियों और घटनाओं को दर्शाने वाली प्रतिमाओं के प्रयोग में अधिक प्रवीण हो जाते हैं। स्कूल जाने तक बच्चों की शब्दावली पर्याप्त अच्छी हो जाती है। वास्तव में बच्चे विभिन्न सन्दर्भों में अन्यान्य भाषायें सीखने में अधिक ग्रहणशील हो जाते हैं। अनेक बार वे द्विभाषी या बहुभाषी के रूप में विकसित होते हैं। वे एक भाषी बच्चों की अपेक्षा भाषा की अच्छी समझ वाले होते हैं ।

प्रारंभिक बाल्यकाल में स्थायी अवधान में वृद्धि हो जाती है। एक 3 वर्ष का बच्चा चित्रांकनी से रंग भरने, खिलौने से खेलने या 15–20 मिनट तक टेलीविजन देखने की जिद कर सकता है। इसके विपरीतर एक 6 वर्ष का बच्चा किसी रोचक कार्य पर एक घंटे से अधिक कार्य करता देखा जा सकता है। बच्चे अपने अवधान में अधिक चयनात्मक हो जाते हैं। परिणामस्वरूप उनके प्रत्यक्षात्म कौशल भी उन्नत होते हैं।

चिन्तन और अधिक तर्कपूर्ण हो जाता है और याद रखने की क्षमता और जानकारी की प्रक्रिया भी उन्नत होती है। वातावरण से अंतःक्रिया द्वारा बच्चा सामाजिक व्यवहार के सही नियम सीखता है जो उसे विद्यालय जाने के लिए तैयार करते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यकाल, 2 से 6 वर्ष में बच्चा पूर्व क्रियात्मक अवस्था द्वारा प्रगति करता है पूर्व–क्रियात्मक अवस्था की 2 उप अवस्थाएं होती हैं:

1. प्रतीकात्मक क्रिया (2 से 4 वर्ष)
2. अन्तःप्रज्ञा विचार (4 से 7 वर्ष)

प्रतीकात्मक क्रिया, उप अवस्था में, बच्चे वस्तुओं का मानसिक प्रतिबिंब बना लेते हैं और उसे बाद में उपयोग करने के लिए संभाल कर रख लेते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चा एक छोटे कुत्ते की आकृति बनाए या उससे खेलने का नाटक करे, जो कि वहाँ उपस्थित ही नहीं है।

बालक उन लोगों के विषय में बात कर सकते हैं जो यात्रा कर रहे हैं या जो कहीं अन्य स्थान पर रहते हों। वे उन स्थानों का भी रेखाचित्र बना सकते हैं, जो उन्होंने देखे हैं, साथ ही साथ अपनी कल्पना से नए दृश्य और जीव भी बना सकते हैं। बच्चे अपनी वस्तुओं के मानसिक प्रतिबिंब का भी खेल में भूमिका निभाने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

पियाजे ये भी विश्वास करते थे कि पूर्व क्रियात्मक बच्चें के सोचने की एक शैली होती है इसे विशेषतः अहं केन्द्रित या विश्व को किसी दूसरे तरीके से देखने की अक्षमता कहते हैं।

पियाजे के अनुसार अहं केन्द्रित बच्चे स्थिति की व्याख्या अपने परिप्रेक्ष्य और अपनी समझ से करते हैं।

पियाजे की पूर्व क्रियात्मक संज्ञानात्मक विकास की अवस्था में अगली उप–अवस्था अन्तःप्रज्ञा विचार उप–अवस्था है जो कि 4–7 वर्ष की आयु तक रहती है। इस उप–अवस्था के विकास में बच्चे प्रश्न जैसे, ''क्यों?'' और ''कैसे?'' पूछकर सीखते हैं। पियाजे ने इसे 'अन्तःप्रज्ञा विचार'' नाम दिया, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि इस अवस्था में बच्चे अपनी समझ और ज्ञान के बारे में इतने निश्चित होते हैं कि उन्हें ये पता ही नहीं चलता कि ये ज्ञान सर्वप्रथम उन्होंने कहाँ से प्राप्त किया है। इन बच्चों में एकाग्रता होती है, वे वस्तु की एक विशेषता पर ध्यान लगाते हैं और अपना निर्णय और निश्चय उसी के आधार पर करते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यकाल में बच्चों की समझने, क्रिया करने और भाषा उत्पादन की क्षमता में तेजी से सुधार होता है। 3 से 6 वर्ष की आयु में 'भाषा विस्फोट' होता है। 3 वर्ष की आयु में उनके बोलने वाले शब्द कोष में लगभग 900 शब्द होते हैं। 6 वर्ष की आयु तक, शब्दकोष नाटकीयता से बढ़कर लगभग 8,000 से 14,000 शब्दों के मध्य हो जाता है।

जब बच्चे दो शब्दों के वाक्य के आगे जाते हैं तो वे व्याकरण के नियम भी सीखना आरम्भ कर देते हैं। शब्दकोष बढ़ाने के अतिरिक्त बड़े बच्चे शब्दों के विभिन्न रूपों को भी बढ़ाते हैं (जैसे– अनियमित क्रिया जैसे ''शी ब्रॉट'' के बजाए ''शी ब्रैंग'')। वे अधिक जटिल वाक्य बनाना भी आरम्भ कर देते हैं।

मध्य बाल्यकाल में संज्ञानात्मक विकास

मध्य बाल्यकाल में बच्चे उत्सुकता से भरे होते हैं और बाहरी वस्तुओं को ढूँढने में उनकी बड़ी रुचि होती है। स्मरण और संप्रत्यय ज्ञान में हुई वृद्धि तर्कपूर्ण चिन्तन को तात्कालिक स्थिति के अतिरिक्त सहज बनाती है।

बच्चे, संवेदी क्रियाओं में भी व्यस्त हो जाते हैं जैसे, संगीत, कला और नृत्य और स्वयं की रुचियों का भी विकास करते हैं।

पियाजे के सिद्धान्त में, मध्य बाल्यकाल में इन्द्रियगोचर सक्रियात्मक अवस्था की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

1. तार्किक नियमों को समझना।
2. स्थानिक तर्क में सुधार।
3. तार्किक चिन्तन, यथार्थ और इन्द्रियगोचर स्थितियों तक सीमित।

मध्य बाल्यकाल में भाषा विकास कई तरीकों से प्रगति करता है। नए शब्द सीखने से अधिक, बच्चे जिन शब्दों को जानते हैं उनकी अधिक प्रौढ़ परिभाषा सीख लेते हैं। वे शब्दों के मध्य संबंध स्थापित कर लेते हैं। समानार्थी और विपरीतार्थी शब्दों को और उपसर्ग एवं प्रत्यय जोड़ने पर शब्दों के अर्थ कैसे बदल जाते हैं को भी समझ लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 10.2

निम्न प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए :

1. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में तीन मुख्य गुण लिखिए।

2. प्रत्यक्ष संक्रियात्मक अवस्था की तीन मुख्य प्राप्तियों का वर्णन कीजिए।

10.4 सामाजिक–संवेगात्मक और व्यक्तित्व का विकास

शैशव एक ऐसा काल होता है जिसमें प्रारम्भिक भावनाएँ पनपती हैं, और बच्चा भावात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ दूसरों की भावनाओं को समझने में उन्नति करता है। प्रारम्भिक बाल्यकाल में बच्चे विचित्र रूप से स्वचेतन भावनाओं, शर्माना और अपराधभाव का मूल्यांकन

करना प्रारंभ करते हैं, बजाए इसके कि अन्य प्रौढ़ों या अपने पालकों के मूल्यांकन पर साधारण सी प्रतिक्रिया दें।

जब बच्चों की स्वयं जागरूकता बढ़ती है, वे वार्तालाप में अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं, और दूसरों के विचारों और भावनाओं को अच्छी तरह समझते हैं, उनकी सामाजिक कुशलता बढ़ जाती है। वे विभिन्न सामाजिक स्थितियों के अनुसार अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति को रूपांतरित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चा क्रोधित हो सकता है, किन्तु वह अच्छी तरह से जानता है कि विद्यालय में क्रोध का नाटक करना ठीक नहीं है। दूसरा बच्चा प्रसन्न और आनन्दित रहने का नाटक करता है, चाहे असल में वह शर्मा रहा हो, यह एक बेहतर तरीका है जन्मदिन की पार्टी में लोगों से मिलने का, जबकि वे दूसरे कई बच्चों को न जानते हों। सामाजिक परिस्थितियों में किसी की भावनाओं में परिवर्तन या नियंत्रण एक ऐसी कुशलता है जिसमें बच्चे समूह में मिल जाते हैं और इससे उन्हें आपस में संबंध बनाने में भी सहायता मिलती है।

तदनुभूति की एक अन्य संवेगात्मक क्षमता, प्रारम्भिक बाल्यकाल में विकसित होती है, जोकि सकारात्मक सामाजिक व्यवहार का एक महत्वपूर्ण घटक है। दूसरे संवेगों के साथ तदनुभूति, संज्ञानात्मक और भाषा के विकास पर निर्भर करती है।

क्रोध, आक्रामकता और भय उचित रूप से कैसे व्यक्त करना है और इससे निपटना एक मूल्यवान जीवन और सामाजिक कौशल है। छोटे बच्चों को अक्सर, क्रोध को नियंत्रित करना, सीखने के लिए बड़ों के निर्देशन और सकारात्मक अनुशासन की आवश्यकता होती है। माता–पिता और पालक न केवल संवेगों पर नियंत्रण का प्रत्यक्ष तरीका सिखाते हैं बल्कि स्वयं आदर्श रूप बनकर बच्चों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। जैसे शिशु बढ़ते हैं, उनकी दूसरों से सामाजिक तौर पर बातचीत करने की क्षमता में भी निपुणता आ जाती है।

बच्चे का मुख्य कार्य (विकासात्मक कार्य) अपने प्रारंभिक पालनकर्ता के साथ बंधन और संयोजन स्थापित करना है। इसके विपरीत, बड़े बच्चे इधर–उधर दूसरे सामाजिक संबंध बनाने लगते हैं। अपनी आयु के बच्चों जैसे पूर्व विद्यालय या डे–केयर के साथी के साथ बातचीत करते समय, वे समानान्तर रूप से उसी खेल में बिना किसी वार्त्तालाप के व्यस्त हो जाते हैं।

बड़े बच्चे अधिक सहयोग के साथ खेलना प्रारम्भ कर देते हैं। सहयोगात्मक खेलों में वे एक छोटे समूह में छोटी क्रिया में व्यस्त हो जाते हैं। प्रायः ये सहयोगात्मक खेलों के प्रथम रूप में बहाना करना और प्रतीकात्मक खेल सम्मिलित हैं। जैसे–जैसे वे साथियों के साथ सामाजिक तौर पर विकसित होते जाते हैं वे तेजी वाले और उलटने–पलटने वाले खेल खेलना पसन्द करने लगते हैं, जिसमें दौड़ना, रेस करना, चढ़ना और प्रतियोगात्मक खेल आते हैं। यह ऐसी अवस्था है जिसमें सामाजिक कौशल जैसे उल्टा चक्कर लगाना और साधारण समूह के नियम का पालन और अभ्यास करना।

मध्य बाल्यकाल– इस काल में बच्चे, सामाजिक संबंधों में एक तीव्र परिवर्तन दर्शाते हैं। वे सामाजिक तुलना कर स्वयं को दूसरों से भिन्न समझने लगते हैं। वे वस्तुओं को दूसरों के

परिप्रेक्ष्य में देखने लगते हैं। एक बच्चा स्वयं की योग्यता देखना प्रारम्भ करता है और अपने साथियों से इसकी तुलना करता है।

अब बच्चे गर्व और शर्म के संवेगों को समझने लगते हैं और एक दी हुई स्थिति में एक से अधिक संवेगों का अनुभव कर सकते हैं। वे संवेगों को दबा या छिपा भी सकते हैं और समायोजन के लिए स्व–निर्धारित पद्धति भी पैदा कर लेते हैं। इस काल में, बच्चे भावनाओं और मूल्यों को अन्तराभूत या नियंत्रित करना प्रारम्भ कर देते हैं। वे, इस आयु में निर्णय करना प्रारम्भ कर देते हैं जो उनके नैतिक विकास पर असर डालते हैं।

इस मध्य बाल्यकाल में लिंग परिवर्तन भी देखा जाता है। लड़कियाँ पारस्परिक और पारिवारिक सम्बन्धों को अधिक महत्व देती हैं जबकि लड़के सामाजिक प्रतिष्ठा पर अधिक बल देते हैं। इस आयु के बच्चों में कमजोरों को तंग करना या धमकाना प्रचलित समस्या है। शोधकर्ताओं के अनुसार तंग करने वाले बच्चे कतिपय ये विशेषताएं प्रदर्शित करते हैं जैसे कहीं भी अनधिकार प्रवेश करना, प्रतिक्रियाहीन माता–पिता के सामने अपनी मांगे रखना। पीड़ित बच्चे बहुधा अवसादग्रस्त होते हैं और उनमें आत्मसम्मान कम होता है।

चित्र 10.2 : खेलते हुए लड़कियाँ

मध्य बाल्यकाल में, ध्यान देने योग्य गुण और विचित्र व्यवहार और संवेगों से हटकर आत्म प्रत्यय व्यक्तित्व के सकारात्मक और नकारात्मक गुणों और सामाजिक तुलनाओं पर केन्द्रित हो जाता है। बच्चा अपनी क्षमताएँ और सीमाएँ देखना आरम्भ कर देता है। वह अपनी पहचान को प्राप्त करने की दिशा में सहायता करता है।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. निम्न कथनों में रिक्त स्थान भरिए:

   क) तदानुभूति का विकास ..... और ..... पर निर्भर करता है।

ख) मध्य बाल्यकाल में लड़कियाँ अच्छे ..... सम्बन्धों को अधिक महत्व देती हैं जबकि लड़के सामाजिक ..... को अधिक महत्व देते हैं।

ग) एक बच्चे को कुछ साथियों द्वारा पसंद और कुछ के द्वारा नापसंद किया जाता है उसे ..... कहते हैं।

घ) जब दो बच्चे बिना किसी वार्तालाप के खेल रहे हों तो उसे ..... खेल कहा जाता है।

ङ) संवेगात्मक विकास का आन्तरिक निश्चय बच्चे का ..... होता है।

10.5 समाजीकरण

मानक, मूल्य और विश्वास जिन्हें समाज में महत्व दिया जाता है प्राप्त करने की प्रक्रिया को सामाजीकरण कहते हैं। यह सांस्कृतिक मूल्यों, प्राथमिकताओं और प्रतिमानों को बच्चों के व्यवहार में संक्रमित करने की प्रक्रिया है। यह विभिन्न प्रक्रियाओं, शैक्षिक संस्थाओं और लोगों द्वारा संपन्न होती हैं। सामाजीकरण में बच्चों के व्यवहार को निर्देशित करना ओर अनैच्छिक एवं गलत व्यवहारिक प्रवृत्तियों को अनुशासित करना, आता है। सामाजीकरण के कुछ महत्वपूर्ण अभिकर्ता, माता–पिता, समवयस्क समूह, विद्यालय, धार्मिक संस्थाएँ और जनसंचार माध्यम जैसे दूरदर्शन इत्यादि हैं। वे प्रत्यक्ष रूप से बच्चों को पालने की प्रक्रिया में प्रभाव डालते हैं साथ ही साथ अप्रत्यक्ष रूप से सांस्कृतिक उचित तरीके के विचार और व्यवहार को बल देते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यकाल विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है क्योंकि इस समय बच्चे अपने परिवारों, समाज और संस्कृति के रीतिरिवाज और रीतियों के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। वे भाषा ग्रहण करते हैं और संस्कृति के आधारभूत सिद्धान्त सीखते हैं। इस अवस्था में प्राथमिक समाजीकरण के अभिकर्ता परिवार के सदस्य होते हैं।

मध्य बाल्यकाल में परिवार महत्वपूर्ण होते हुए भी समवयस्कों एवं विद्यालय का प्रभाव प्रमुख हो जाता है। संचार माध्यमों जैसे दूरदर्शन और कम्प्यूटर का प्रभाव अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। यही वह समय है जब सामाजिक रुढ़ियाँ और पूर्वाग्रह विकसित होने की अधिक संभावना होती है।

कई शोध किए गए हैं कि पालने के तरीकों का प्रभाव बच्चे के सामाजीकरण पर पड़ता है। पालने के मुख्य 4 तरीके हैं:

1. **अधिकारपूर्ण तरीका :** मांग करना, नियंत्रण करना, गहन पालन करना।
2. **अनुज्ञात्मक :** (तुष्ट होना), बिना किसी मांग के पालन करना।
3. **अधिकारिक तरीका :** दृढ़, सतत पालन, अनुशासन के कारण बताना।
4. **उपेक्षापूर्ण या असंलग्न तरीका :** अरुचिपूर्ण चिन्तारहित, कम नियंत्रण और वार्तालाप।

परिवार, साथी, संचार माध्यम और विद्यालय के अतिरिक्त भी कुछ दूसरे कारक हैं जो सामाजीकरण की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं। माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और कुल परम्परा बच्चों के विकास में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से असर डालते हैं। कुल परम्परा (एथनीसिटी), परिवार के आकार, संरचना, शिक्षा, आय, रचना और फैले हुए जाल से जुड़ी होती है।

चित्र 10.3: निचले एसईएस से बच्चे

पाठगत प्रश्न 10.4

निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

1. सामाजीकरण से आप क्या समझते हैं?

2. पालन पोषण के मुख्य तरीके बताएँ।

आपने क्या सीखा

- शारीरिक विकास, प्रारम्भिक और मध्य बाल्यकाल में होता रहता है किन्तु उसकी दर शैशव से कम होती है।
- शारीरिक विकास में, लैंगिक अन्तर होते हैं जैसे लड़कियों में विकास में तीव्रता लड़कों की अपेक्षा मध्य बाल्यकाल में पहले आती है।
- साधारण गतिक विकास प्रारम्भिक बाल्यकाल में तीव्रता से होता है।
- मध्य बाल्यकाल में, बच्चों में, साधारण और निपुण गतिक कौशल का विकास होता रहता है वहीं मांसपेशियों पर नियंत्रण और नेत्र और हस्त संयोजन में सुधार चिन्हित होता है।

- प्रारम्भिक बाल्यकाल में बालक, संज्ञानात्मक विकास की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में होता है।
- मध्य बाल्यकाल में, बालक, प्रत्यक्ष संक्रियात्मक अवस्था में पहुंचता है, जिसमें रुढ़िवादिता, रूपान्तरण, क्रमिकता और तर्कपूर्ण चिन्तन प्राप्त होता है किन्तु बालक अभी भी अमूर्त तथ्यों से निपटने में कठिनाई का अनुभव करता है।
- बाल्यकाल के संवेगात्मक विकास में स्वचेतनात्मक संवेग और संवेगों की अभिव्यक्ति में बेहतर व्यवस्था का विकास शामिल होता है।
- समानान्तर खेलों से और सहयोगात्मक खलों से बाल्यकाल में सामाजिक विकास में वृद्धि होती है। मध्य बाल्यकाल में ध्यान–केन्द्र परिवार से खिसककर क्रमशः विद्यालय और साथियों पर हो जाता है।
- बच्चे के आत्मसम्मान और समायोजन में साथियों की स्वीकार्यता एक महत्वपूर्ण निर्णायक है।
- पालन–पोषण के तरीके का प्रभाव बच्चे के सामाजीकरण की प्रक्रिया और व्यक्तित्व के विकास में होता है।
- सांस्कृतिक और सामाजिक कारक, पालन–पोषण के तरीके और बच्चे के पालने की धारणा पर और परिणामस्वरूप सामाजीकरण की प्रक्रिया पर भी प्रभाव डालते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. प्रारम्भिक बाल्यकाल में शारीरिक विकास के मुख्य लक्षणों का विवरण दीजिए।
2. मध्य बाल्यकाल में गतिक विकास के मुख्य लक्षण बताइए।
3. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था और पियाजे के प्रत्यक्ष अवस्था के सिद्धान्त में अन्तर बताइए।
4. प्रारम्भिक बाल्यकाल में संवेगात्मक विकास के मुख्य लक्षण बताइए।
5. बाल्यकाल में सामाजीकरण की प्रक्रिया में सांस्कृतिक कारक कैसे प्रभाव डालते हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1 खिसकना, खड़े होना, चलना

2. ग्रहण करना, चिकोटी काटना, पेंसिल पकड़ना

टिप्पणी

10.2

1. मानसिक प्रतिबिम्ब उत्पन्न करना उसे संग्रहीत करना, घटनाओं के विषय में बात करना, लोग कल्पना से नए दृश्य बनाते हैं।
2. तार्किक नियमों को समझना।
3. स्थानिक तार्किक भाषा के विकास में सुधार।

10.3

1. संज्ञानात्मक भाषा
2. परस्पर, प्रतिष्ठा
3. विवादित
4. समानान्तर
5. प्रकृति

10.4

1. मानक, मूल्य, विश्वास प्राप्त करना अनैच्छिक व्यवहार का अनुशासित नियमन, सामाजीकरण के अभिकर्ता
2. अधिकारपूर्ण, अनुज्ञात्मक, आधिकारिक और उपेक्षापूर्ण

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. खंड 10.13 देखें
2. खंड 10.1.4 देखें
3. खंड 10.2.1 देखें और खंड 10.2.2 देखें
4. खंड 10.3.1 देखें
5. खंड 10.4 देखें